# शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 15 | उदयपुर सोमवार 15 अगस्त 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.


# इन्कलाबी पांवों में यादों की जिन्दगी

## -स्वरूप व्यास-

**श्री स्वरूप व्यास वाणी जगत का एक ऐसा अविस्मरणीय नाम है जिसने लगातार 30 वर्षों तक फिल्म्स डिवीजन बम्बई में रहकर डोक्यूमेंट्री फिल्मों में अपनी वाणी का एक छत्र जादुई करतब दिखाया। कोई 6 हजार फिल्मों में स्वरूप व्यास ने अपनी वाणी दी। उदयपुर निवासी व्यासजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं। उनकी 'यादों की यात्रा' नाम से अप्रकाशित आत्मकथा का एक याद-प्रसंग प्रकाशित है।**

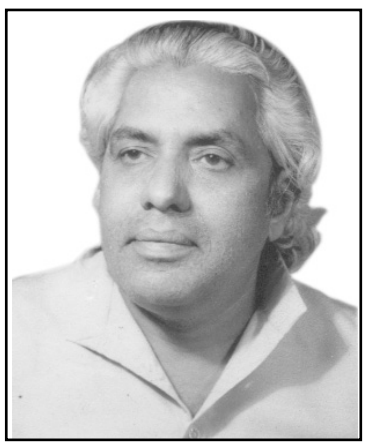

बंध गई थी जिन्दगी तब इन्कलाबी पांव में। सन् 1942 के आंदोलन का समय। मैं अजमेर में था। उम्र कोई सौलह साल की। शृंगार की, आग की, एक मशाल की। बापू ने कहा था- करो या मरो। तब करोड़ों-करोड़ों भारतवासियों के लिए यह केवल एक नारा नहीं था, जयकारा था। इसमें इतिहास हमारा था। इसमें थी धरती की धड़कन। बिजली की कड़कन। स्वांसों का स्पंदन। जीवन का कंपन। प्राण विसर्जन। यह एक मंत्र था 'सर्वस्व समर्पण' का यह देश हमारा है।

घर में विवश, बाहर परवश। जब अजमेर में कोई साथ न मिला तब मैं उदयपुर आया। यहां कई अपने थे। उनके भी मर मिटने के सपने थे। अपने बड़े भाई चन्द्रेश व्यास और प्रजामंडल के कई नेताओं से मिला जिनमें प्रमुख थे- माणिक्यलाल वर्मा, बलवंतसिंह मेहता, भूरेलाल बया, हीरालाल कोठारी, मोहनलाल सुखाड़िया, दयाशंकर श्रोत्रिय, जनार्दनराय नागर, यमुनालाल वैद्य, रोशनलाल बोरलिया, भवानीशंकर वैद्य आदि-आदि। आंदोलन के उन दिनों में सूरजपोल के स्काउट आश्रम की सभाओं में वर्माजी, सुखाड़ियाजी और जनुभाई के भाषण जन-मन को झंकृत कर देते थे।

उदयपुर आया तो सबसे पहले यहां की हाईकोर्ट पर तिरंगा लहराने में हाथ बंटाया। मेरे साथी थे स्वर्गीय रोशनलाल शर्मा और वीरभद्र जोशी। दो सितम्बर 1942 को भारत-भारती (संस्था) से हमें विदा किया गया। हमारे सूत्रधार थे चन्द्रेश व्यास। श्रीमती नर्मदा यादव ने विदाई तिलक लगाया। आदेशानुसार मैं तिरंगा झण्डा लेकर हाईकोर्ट की छत पर पहुंच गया। मेरे वहां पहुंचने के कोई दस मिनिट बाद रोशनजी और वीरभद्रजी आये। उन्हें तिरंगा दिया और गांधी टोपी पहनाई। उन्होंने जोश में आकर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा लगाया और मेरे नीचे उतरने से पहले ही तिरंगा लहरा दिया। तब मैंने अपने आपको घोर संकट में पाया। उन्हें तो गिरफ्तारी देनी ही थी मगर मुझे पुलिस आये उससे पहले अपनी रफ्तार पकड़नी थी। छत का छज्जा पकड़ा। नीचे कूदा और धीरे-धीरे नाल से उतरकर सड़क पर आया। किसी तरह दिल्ली दरवाजे तक पहुंच पाया। तब टांग देखी तो लहू-लुहान। यहां से लड़खड़ाता-लंगड़ाता गुलाबबाग पहुंचा जहां से मुझे पहुंचना था-लोटन मगरी के पास। वहां दो साथी साईकिल पर इधर-उधर चक्कर लगाते मेरी बाट जो रहे थे। उनमें से एक ने मुझे अपने घर पहुंचाया।

**आजाद बुलेटिन :**

कुछ दिन मरहमपट्टी के बाद, फिर इन्कलाब जिन्दाबाद। हमारे हाथीपोल के मकान में एक रंग की ओवरी थी। उसमें एक साईक्लोस्टाईल मशीन थी। मैटर भाई साहब तैयार करते। लिखता और छापता मैं था। रात भर। फिर तड़के-तड़के हम तीन-चार जन साईकिल पर हाथीपोल होते हुए फतहसागर की पाल तक आजाद बुलेटीन बिखेरते जाते। एक दिन मालूम हुआ कि इस मशीन का पता बताने वाले की तलाश है तो मशीन रंग की ओवरी से तुरंत हटा दी गई। आजाद बुलेटीन बंद। फिर एक दिन मुझसे कहा गया कि एक बण्डल अजमेर में अमुक जगह अमुक आदमी को दे आऊं।

मेरे पास एक थैला था। नीचे बण्डलों के ऊपर मेरे कपड़े। तीस रूपये मिल गये। अजमेर का टिकिट लेना था। तांगा मुश्किल से महासतिया के पास पहुंचा होगा कि मैंने देखा, चन्द्रेशजी पीछे साइकिल पर आ रहे हैं। तांगे में मेरे साथ हरिभाई पारीख थे। उन्होंने एकदम तांगा रोका। मेरे हाथ से थैला लिया और गायब। हरिभाई भी उनके साथ हो लिए। शायद उन्हें मालूम हो गया था कि पुलिस पीछे है मगर पीछे नहीं, आगे थी। मैं अकेला स्टेशन पहुंचा। तांगेवाले ने मुझे स्टेशन छोड़ दिया। मैं उसे एक रूपया देने लगा तो वह बोला- तुम्हें मैंने गोद में खिलाया है। इस एक रूपये की तुम्हीं मिठाई खा लेना और वह चलता बना। मैं खाली हाथ प्लेटफॉर्म पर पहुंचा। कुछ नीडर सा एक मुख्तसर लीडर सा। अचानक तब किसी ने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी तलाशी ली पर कुछ हाथ नहीं लगा। मुझे छोड़ दिया। मैं घर आया। मगर इस घटना के बाद हर रोज पुलिस घर आती। मेरी मां बहुत घबराती। चन्द्रेशजी घर नहीं आते और हम कहीं बाहर नहीं जाते। हम भी तंग आ गए इस घरेलु घेरे से। फिर एक दिन घरवालों ने उदयपुर से रवाना कर दिया। जाना था अजमेर पर पहुंचा बम्बई। बम्बई में जाते ही रोटी की तलाश ने मुझे समुद्र की तलाश के साथ जो जकड़न दी उससे मेरे सारे सपने काफूर हो गये।


vedanta | HINDUSTAN ZINC

हिन्दुस्तान ज़िंक की ओर से आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं...

"Khushi"

नन्हें भारत की

Building a Life of Dignity for Underprivileged Children...

A Vedanta Group initiaitve..

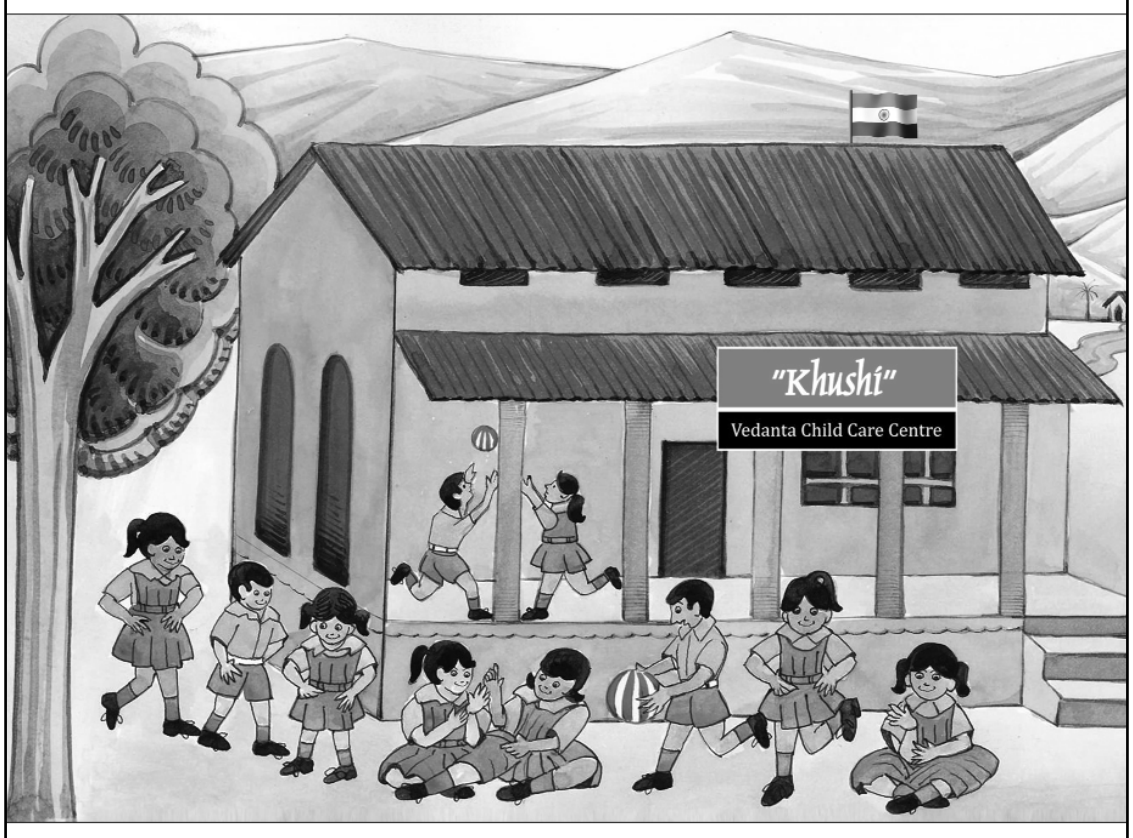


भारत का ज़िंक - हिन्दुस्तान ज़िंक

# लड़वीर कभी रोता नहीं – डॉ. महेन्द्र भानावत

( 1 )
तुमने मेरी दुखती हुई रग पर
आंसू का राग छेड़ दिया
तो सुनो, मैं सुनाता हूं
आंसू इन्हीं आंखों से निकलते हैं
जिनका समंदर कभी खाली नहीं होता
कभी सूखता नहीं
कभी अपनी थाह नहीं देता
एक नहीं, अनेकानेक रूप हैं आंसू के
तुम कौनसे आंसू की बात कर रहे हो?

( 2 )
अपने पूर्वजों की, प्रियजनों की,
परिजनों की
स्मृतियों में छलक पड़ते हैं
मोटी-मोटी बूंदों से
मोतियों से पारदर्शी
अलसियों से लम्बे-लम्बे
बकरी के दूध सी धार देते
तर्र-तर्र आंसू
और कभी गाय के गीड़ से
मोटा बहाव लिये
जम जाते हैं गालों पर।

( 3 )
संकट में विपदा के, आफत के
आंसू अलग होते हैं दोस्त!
उनमें मैं ही नहीं होता
सभी रोते हुए लगते हैं
बंद आंखों की पलकों में कैद
घनीभूत अंधेरे में।

( 4 )
हल्दीघाटी में मैंने देखा है
माटी भी रो रही
पत्ते-पत्ते झर रहे
रूंख ठूंठ हो गये रोते-रोते
पहाड़ियां हाड़ हो गई
रक्ततलाई का आंसू तो उकल रहा है
शौर्य-पराक्रम और प्रताप के ताप से।

( 5 )
हकीम खां सूर की आंखों का रक्त
लाल अंगारों की रश्मियां लिए
अभी थमा नहीं है
उसके हाथ में भींची तलवार
सोई नहीं है
वैरियों के खून के आंसू पीने की
उसकी प्यास अभी बुझी नहीं है
लपलपाती उसकी चमक
भोभर में लिपटी आग सी
चलचलाने को मचल रही है।

( 6 )
रोगी के मरणासन्न आंसू
तुमने देखे होंगे
गरम-गरम चिता सा ताप सहते
संताप झेलते हरे हर होना चाहते हैं।

( 7 )
गमी के आंसू और मगर के आंसू का
भेद समझना हो तो समझो कि
पानी में रहकर भी जो पानी
मगर के आंसू में नहीं होता
वही पानी किसी अखंड दुखियारी की
आंखों में से निकल
अपने आसपास को भी भिगो देता है।

( 8 )
प्रतीक्षा के आंसू की धार
अंगुलियों की रेख को घिसा देती है।

( 9 )
मीरां के आंसू
मिलन और विरह के सन्निपात
मिलन ऐसा कि छूटे ना
विरह ऐसा कि टूटे ना।

( 10 )
देखो नीर भरी बदली के आंसू
रोये तो ढुल जाय
और ढब जाय तो लुल जाय।

(11)
ढोलक के आंसुओं में
कठपुतलियां रोती हैं।

(12)
पियु-पियु की रट लगाते-लगाते
कोयल के आंसू काले पड़ जाते हैं।

(13)
अंधी आंखों का आंसू देखना हो
तो सूरदास को देखो
पाप का संताप झेलने
जिसने अपनी ही आंखें फोड़ दीं।

( 14 )
अंधेरा पीती उन विधवाओं को मैंने देखा है
जीवन के धुंधलके में जो हर क्षण
घोंसला बुनती रहती है
किसी के हलरावण का नहीं
अपने जीवन के बलरावण के लिए।

( 15 )
इधर वे आंसू भी हैं
जो मौत को बुलाते हैं
पर मौत है कि उन्हें पा
पराजित हो जाती है।

( 16 )
तुमने सुनी होगी कहावत
हिये में आंख आना
इतिहास साख भर रहा है
उन रणबांकुरों की
जो मुंड खोने पर भी रुंडमुंड हो
अरदिलों को पछांट देते रहे।
उनके हिये में हो आती
तीसरी आंख
गन्ने की पंगेरी की तरह।

( 17 )
और नहीं सुना हो तो सुनो
लड़वीर कभी रोता नहीं
आंसू नहीं बहाता
उसका रोम-रोम
अहर्निश अगन-बाण
बरसाता रहता है।

# शोध के बढ़ते दायरे और घटती गुणवत्ता

उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय की हिंदी अध्ययनशाला के प्रमुख डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा से आठ अगस्त को घंटे भर की मुलाकात में साहित्य और शोध से जुड़े अनेक प्रसंगों पर गंभीर चर्चा हुई। सेमीनारों और संगोष्ठियों की चर्चाओं से भी बेहतर मुखर, चर्चा के लिए ऐसी भेंट ही अधिक कारगर उपयोगी तथा मूल्यवान होती है जहां सबकुछ अनौपचारिक और सिलसिलेवार कुछ नहीं होता। उज्जैन से वे मासिक 'अक्षरवार्ता' और उदयपुर से हम पाक्षिक 'शब्द रंजन' से जुड़कर अक्षर तथा शब्द की वार्ता-रंजना करते रहे। इसी पर साहित्य की निधि शोभित है।

मैं उज्जैन अध्ययनशाला में गया हूं। डॉ. शर्मा तथा उनके साथियों ने अध्ययनशाला को केवल कक्षीय

अध्ययन-अध्यापन तक ही सीमित नहीं रखा। वहां उन्होंने साहित्य का बड़ा ही मूल्यवान संग्रहालय बना रखा है जो एक धरोहर तथा विरासत का विरल विभूति वैभव ही बना हुआ है। वहां के छात्र अपने गुरूजनों के साथ दिवस के अवसान की उबासी नहीं, साहित्य के विविध शोध रचनाकारों से बोधगम्य सीपियों की तलाश लेते पाणीदार मोती की चमक निखारते हैं। वहां छात्रों का समय रेत की घड़ी की तरह नहीं गुणता बल्कि बया के घोंसलों की तरह बुनता है।

अध्यनशाला के छात्र-छात्राओं द्वारा कराई जा रही शोध का स्वाद लेना हो तो अक्षरवार्ता के जनवरी अंक में छपित शोधार्थियों के आलेख पढ़ें (क) रेहाना बेगम लिखित अधुनातन जनसंचार माध्यमों में पुतलीकला का प्रयोग (ख) संध्या राजपूत लिखित मालवी लोकगीतों में प्रकृति वर्णन (ग) नम्रता ओझा लिखित हाड़ौती लोकगीतों में व्रत, तीज-त्यौहार व पर्वों के रंग (घ) श्रीमती चन्द्रकांता बड़ोले लिखित आख्यानों की परंपरा और निमाड़ के लोकाख्यान का वैशिष्ट्य।

– म. भा.

# कोलगेट का मैजिकल सी वर्ल्ड

**उदयपुर।** कोलगेट स्ट्रांग टीथ पैक का लिमिटेड एडिशन उपभोक्ता को 'मैजिकल सी वर्ल्ड' प्रदान कर रहा है। उपभोक्ता को बस कार्टन को काटना होगा और इसके अंदर की ओर प्रिंट की गई विभिन्न रचनाएं बच्चों को खेलते हुए सीखने का बेहतरीन माध्यम प्रदान करेंगी। ओरल केयर में मार्केट लीडर, कोलगेट पॉमोलिव (इंडिया) लि. बच्चों को अद्वितीय एवं सतत माध्यम प्रदान कर रहा है, जिसके द्वारा वो अपने टूथपेस्ट के कार्टन से मैजिकल सी वर्ल्ड बना सकते हैं।

कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लि. के मार्केटिंग डायरेक्टर एरिक जुम्बर्ट ने कहा कि इस ऑफर के द्वारा बच्चे मैजिकल सी वर्ल्ड बना सकते हैं और कला एवं शिल्प के माध्यम से अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। इस अभियान के साथ कोलगेट खेल-खेल में बच्चों में योग्यता एवं अनुभव का विकास करना चाहता है, ताकि उनका व्यक्तित्व पूर्ण रूप से विकसित हो सके। लिमिटेड एडिशन कोलगेट स्ट्राँग टीथ मैजिकल सी वर्ल्ड ऑफर भारत के सभी रिटेल आउटलेट्स पर 50 ग्रा., 100 ग्रा., 200 ग्रा. 300 ग्रा. एवं 500 ग्रा. पैक में उपलब्ध है। बच्चे चारों मैजिकल सी वर्ल्ड सेट इकट्ठा करें- ट्रेज़र हंट पर जाएं, पायरेट शिप के साथ लड़ाई करें और कोरल रीफ में उतरकर छोटी छोटी मरमेड के साथ डीप सी मैजिक देखिए। इसमें समुद्री दुनिया के 15 से ज्यादा किरदार हैं। ये पैक बच्चों को समुद्र की रहस्यमयी यात्रा पर ले जाएंगे।

# निवेश को प्रोत्साहित करने वाला पहला अभियान 'मुमेन्टम झारखण्ड ' लांच

**उदयपुर।** झारखण्ड सरकार ने अपने पहले निवेश प्रचार अभियान 'मुमेन्टम झारखण्ड' लॉन्च किया। 'डिजिटल झारखण्ड' को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य के साथ ब्राण्ड के लोगो के अनावरण के साथ वेबसाईट momentumjharkhand.com को भी लॉन्च किया गया। इस अवसर पर झारखण्ड के मुख्यमंत्री रघुबर दास ने कहा कि झारखण्ड स्पष्ट दृष्टिकोण एवं सशक्त रूपरेखा के साथ निवेश को तैयार है। हम कारोबार में सुधार की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ राज्यों की सूची में शुमार हैं और हमने डीआईपीपी (ओद्यौगिक नीति एवं प्रचार विभाग) के दिशानिर्देशों के आधार पर निवेश की सर्वश्रेष्ठ प्रथाओं को अपनाया है। केन्द्र सरकार के दृष्टिकोण सबका साथ, सबका विकास पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ तालमेल में काम करना मेरा सौभाग्य है।

उन्होंने कहा कि झारखण्ड सरकार ने सीमेन्ट उद्योग के दिग्गज एसीसी लि. एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनी हैवलेट पैकर्ड एन्टरप्राइज़ के साथ समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए हैं। एसीसी के साथ समझौता ज्ञापन के तहत इसके सिंदरी प्लान्ट की क्षमता को 1.35 MMTPA से बढ़ाकर 2.5 MMTPA किया जाएगा। हैवलेट पैकर्ड एन्टरप्राइज़ के साथ दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। पहला समझौता ज्ञापन क्लाउड आधारित ई-एचसी सिस्टम के माध्यम से स्वास्थ्यसेवाओं की डिलीवरी एवं शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करेगा। यह अंतिम उपयोगकर्ताओं तक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता एवं वंचित क्षेत्रों में शिक्षा के मुद्दों पर काम करेगा। दूसरा समझौता ज्ञापन आईसीटी उन्मुख प्रोद्यौगिकियों के माध्यम से शिक्षा की पहुंच बढ़ाने के लिए वर्चुअल क्लासरूम उपलब्ध कराएगा। भारतीय उद्योग परिसंघ के महानिदेशक चन्द्रजीत बैनर्जी ने कहा कि झारखण्ड ने बदलाव की रूपरेखा तैयार कर ली है, यह न केवल अपने विशाल संसाधनों से बल्कि कुशल मानवश्रम के द्वारा मेक इन इण्डिया को साकार रूप देने के लिए प्रयासरत है।

मुख्य सचिव श्रीमति राजबाला वर्मा ने कहा कि हम एक मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक हब का विकास कर रहें हैं जो उत्तर-पूर्व भारत के साथ कनेक्टिविटी में क्रान्तिकारी बदलाव लाएगा। उद्योग सचिव एस के बर्नवाल ने कहा कि हमने कई राज्यों की नीतियों का विस्तृत अध्ययन और तुलनात्मक विश्लेषण किया है।

# उदयपुर संभाग मुख्यालय पर गृहमंत्री कटारिया ने फहराया तिरंगा

**उदयपुर।** उदयपुर संभाग मुख्यालय पर स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया गया। मुख्य समारोह महाराणा भूपाल स्टेडियम में

हुआ जहां गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने ध्वजारोहण किया। श्री कटारिया ने परेड का निरीक्षण किया और मार्चपास्ट की सलामी ली। समारोह में गृहमंत्री कटारिया ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों एवं उल्लेखनीय सेवाओं के लिए जिला प्रशासन की ओर से 88 लोगों को प्रशंसापत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर गृहमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानियों एवं दिवंगत स्वतन्त्रता सेनानियों की पत्नियों को श्रीफल एवं शॉल भेंट कर अभिनंदन किया। राज्यपाल का संदेश पठन अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) छोगाराम देवासी ने किया।

समारोह में गृहमंत्री ने देश को आजादी दिलाने वाले शहीदों का स्मरण करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और स्मार्ट सिटी बनने की ओर तेजी से अग्रसर झीलों की नगरी उदयपुर के विकास के लिए किए जा रहे बहुआयामी प्रयासों एवं संचालित प्रमुख योजनाओं की जानकारी देते हुए नागरिकों से उदयपुर को साफ-सुथरा, हर दृष्टि से स्वच्छ और सुन्दर बनाने में समर्पित एवं आत्मीय भागीदारी का आह्वान किया।

गृहमंत्री ने श्रेष्ठ परेड प्रदर्शन के लिए सीनियर डिवीजन एनसीसी आर्मी (बॉयज) प्रथम, सीनियर डिवीजन एनसीसी नेवल (बॉयज) द्वितीय तथा सीनियर डिवीजन एनसीसी आर्मी की टुकडी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया। समारोह में मूक बधिर विद्यालय के डेढ़ सौ छात्र-छात्राओं और श्रीराम उमावि तथा ए वन स्कूल के एक हजार छात्र-छात्राओं ने सामूहिक शारीरिक व्यायाम का बेहतरीन प्रदर्शन किया। सेन्ट्रल पब्लिक स्कूल के एक हजार विद्यार्थियों ने सामूहिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर मन मोह लिया। इस अवसर पर पुलिस बैण्ड एवं सिखलाई (आर्मी बैण्ड) की देशभक्ति से ओत-प्रोत मधुर धुनों भरी बैण्ड प्रस्तुति ने मंत्र मुग्ध कर दिया।

समारोह का संचालन आकाशवाणी के वरिष्ठ उद्घोषक राजेन्द्र सेन तथा डॉ. सीमा कोठारी चम्पावत ने किया। समापन राष्ट्रगान से हुआ। समारोह में संभागीय आयुक्त भवानीसिंह देथा, उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, जिलाप्रमुख शांतिलाल मेघवाल, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, जिला कलक्टर रोहित गुप्ता, जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्रप्रसाद गोयल, मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविचल चतुर्वेदी सहित जन प्रतिनिधिगण, सेना के अधिकारी, न्यायिक अधिकारीगण, विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कार्मिक, गणमान्य प्रबुद्धजन एवं नागरिक उपस्थित थे।

**पी.एम.सी.एच में झण्डारोहण**

भीलो का बेदला स्थित पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल में स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। समारोह मे पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर डॉ. डी.पी. अग्रवाल ने झण्डारोहण किया। उन्होंने कहा कि जल्दी ही पीएमसीएच में नि:सन्तान दम्पतियों के लिए आईवीएफ की सुविधा शुरू की जाएगी।

**हिन्दुस्तान जिंक में झण्डारोहण**

हिन्दुस्तान जिंक के प्रधान कार्यालय के प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कॉर्पोरेट फाईनेन्स कंट्रोलर हेमेन्द्र शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया एवं सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने बताया कि सैकड़ों नहीं हजारों देशभक्तों के बलिदान, अथक प्रयास अनवरत स्वाधीनता आन्दोलन के बाद भारत आजाद हुआ।

**विद्यापीठ में झण्डारोहण**

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विद्यालय के तीनों केम्पस में

स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने ध्वजारोहण किया, अध्यक्षता कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर ने की।

प्राचार्य डॉ. चित्तौड़ा ने बताया कि इस अवसर पर ओसीडीसी के होम्योपेथिक कॉलेज, फिजियोथेरेपी कॉलेज, श्रीमन् नारायण, लोकमान्य तिलक कॉलेज के छात्र- छात्राओं को देशभक्ति गीतों व नृत्य पर अपनी आकर्षक प्रस्तुतिया दी।

## आलोक पगारिया, विनय भाणावत, नरेन्द्र नागदा, भारत शर्मा सम्मानित

**उदयपुर।** स्वतंत्रता दिवस पर जिला स्तरीय मुख्य समारोह में राष्ट्रीय स्तर पर मंच संचालन हेतु आलोक पगारिया, 786 करेंसी नोटों में तीन मुस्लिम राष्ट्रों दुबई, बांग्लादेश और पाकिस्तान का रिकॉर्ड तोड़कर हिन्दुस्तान के नाम करने पर विनय भाणावत, पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएं देने पर नरेन्द्र नागदा तथा भारत शर्मा को मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

## एयरटेल ने किया वॉयस कॉलिंग को निःशुल्क

**उदयपुर।** भारती एयरटेल ने अपनी 'माई प्लान इनफिनिटी' सीरीज़ में दो नए पोस्टपेड प्लांस की घोषणा की, जिसमें 1199 रुपये में 3जी/4जी बंडल्ड डेटा के साथ असीमित वॉयस कॉल की सुविधा पेश की गई। एयरटेल पोस्टपेड 'माई प्लान इनफिनिटी' में असीमित वॉयस कॉलिंग के साथ डेटा बेनेफिट्स को पेश किया है। 'इनफिनिटी' प्लान के अंतर्गत 1199 रुपये में असीमित वॉयस कॉलिंग-लोकल, एसटीडी और नेशनल रोमिंग- के साथ 100 एसएमएस प्रतिदिन, 1 जीबी 3जी/4जी डेटा और विंकयुजिक और विंक मूवीज़ का नि:शुल्क सब्सक्रिप्शन मिलेगा। 1599 रुपये के प्लान में असीमित वॉयस कॉलिंग-लोकल, एसटीडी और नेशनल रोमिंग- के साथ 100 एसएमएस प्रतिदिन, 5 जीबी 3जी/4जी डेटा और विंकयुजिक और विंकमूवीज़ का नि:शुल्क सब्सक्रिप्शन दिया जाएगा।

## लेनोवो वाइब 'के5 प्लस' की पेशकश

**उदयपुर।** लेनोवो ने वाइब के5 प्लस की पेशकश की है। यह एक ऐसा स्मार्टफोन है, जिसमें सर्वश्रेष्ठ पर्सनल एन्टरटेनमेंट की पेशकश की गई है।

लेनोवो के मोबाइल बिजनेस ग्रुप के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर सुधिन माथुर ने कहा कि यह डिवाइस फुल एचडी डिस्प्ले और डॉल्बी एटम्स स्पीकर्स एवं अन्य से सुसज्जित है। वाइब के5 प्लस 3जीबी रैम के साथ सिर्फ फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध है। इसकी कीमत 8499 रूपये है और यह शैम्पेन गोल्ड, सिल्वर और ग्रैफाइट ग्रे रंग में उपलब्ध है। लेनोवो द्वारा जारी प्रत्येक मॉडल में तकनीक के बेहतर पहलू को शामिल करने पर निरंतर जोर देते हैं। हमारा लक्ष्य किफायती कीमत में सर्वश्रेष्ठ तकनीक उपलब्ध कराना है। वाइब के5 प्लस में टैपर्ड मेटल बॉडी में 12.7 सेमी (5) का खूबसूरत डिस्प्ले, हेडफोन्स पर आकर्षक डॉल्बी एटम्स के साथ ही मूवीज, गेम्स, म्यूजिक सुविधा के साथ 13एमपी का रियर कैमरा 5-पीस लेंस से सुसज्जित है।

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 15 अगस्त 2016

# गायों पर संकट

आजादी से पूर्व पहली-दूसरी कक्षा में ही गा मेने गाय और गाय हमारी माता है, पढ़ लिया था। उसके बाद घरों में गाय पालना देखा। गाय पालन से परिवार चलता था। गांव की सभी गायें चोपे में छोड़ दी जातीं। ग्वाला उन्हें चरने के लिए ले जाता। संध्या को गायें समूह रूप में आतीं। उनके आगमन के साथ धूल का अंबार छाया रहता। वह समय ही गोधूलि के नाम से जाना गया।

कोई गाय हर्यावड़ी होती। खेतों में कूद जाती तो फसल बर्बाद कर देती तब उसके गले में मोटी लकड़ी बांध दी जाती जिसे 'डींगरा' कहते। कोई गाय अपना ही दूध पी जाती तब उसके मुंह पर कांटेदार पट्टा बांध दिया जाता। घर में कोई गाय दुहते वक्त दूध चढ़ा देती। कोई ठीक से दुहने नहीं देती तब रस्सी से उसके आंटा देकर दोनों पांव बांध दिये जाते। यह रस्सी 'नूजणा' कहलाती।

गाय की सेवा के कई फल मिलते हैं। वछबारस पर गाय के बछड़े की पूजा का उत्सव मनाया जाता है। गाय के गोबर की कृषि में उपयोगिता के फलस्वरूप ही हमारे राष्ट्र का धन गोबर कहा गया है। बहिन-बेटियों को गाय देने की प्रथा है। ज्यों-ज्यों उसका वंश फलता है, बहिन-बेटी का परिवार समृद्ध होता है। किसी त्यौहार-उत्सव पर घर में मौत होने पर 'ओख' पड़ जाती है तब उस दिन गम बना रहता है। उसी तिथि घर में किसी के बालजन्म या फिर गाय के बछड़े-बछड़ी जन्म पर ओख टूटती है। लोक में कोई पाप करने पर गाय दान से उससे मुक्त होने की मान्यता है। प्रायश्चित रूप में भी गो-दान करने की परंपरा है। राजा-महाराजा तथा श्रेष्ठीजनों द्वारा बड़ी संख्या में गो-दान के उदाहरण मिलते हैं। एक-एक लाख गायें तक दान में दी जाती थीं। गुजरात का गोधरा नाम तो गायों की धरा होने का ही प्रमाण है।''

कोई-कोई गाय अपनी पीठ पर पूंछ जैसी लचीली एक फीट के लगभग जीभ देती मिलती है। ऐसी गाय ईश्वरीय देन और दिव्य रूप लिए होती है। गोपालक उसकी पीठ पर कपड़े की कलात्मक झूल डाले घर-घर दर्शनार्थ घुमाता है और धान चून पैसा इकट्ठा करता है। विविध लोकों में स्वर्ग-नरक लोक की तरह गोलोक की मान्यता है। सांप-सीढ़ी के खेल में भी इस लोक की महिमा स्वीकारी मिलती है।

इतना सब होते हुए भी घोर दुख और निराशा है कि हमारे यहां गायों के साथ ठीक से व्यवहार नहीं होता। कई छद्मवेशी गोरक्षक मिलेंगे जो गाय-हिंसा के पक्षधर बने हुए हैं। जगह-जगह गोशालाएं खुली हैं पर उनकी स्थिति बड़ी दयनीय बनी हुई है। इसके लिए सबकुछ सरकार पर छोड़ना और निर्भर रहना ही पर्याप्त नहीं है। जो लोग गायों की आड़ में गोरख बने हुए हैं, उनकी भी खबर लेनी होगी और सामूहिक दायित्व के साथ पुरातन गो-संस्कृति की प्रतिष्ठा करनी होगी।

# क्वालिटी एज्युकेशन एवं रिसर्च को प्राथमिकता दें : प्रो. सारंगदेवोत

**उदयपुर।** जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय डबोक के अन्तर्गत संचालित सी.टी.ई. कार्यक्रम सलाहार समिति की बैठक वाइस चांसलर प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। विशिष्ठ अतिथि माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक (खेलकूद) हरिप्रकाश डिंडोर, आईएएसई के मोहनलाल जिंगर, शिक्षा उपनिदेशक कार्यालय से नरेशचन्द्र डांगी, शिक्षाविद् प्रो. के. सी. एस. जैन, के.सी. मालु, मांगीलाल नागदा, डॉ. शशि चितौड़ा, डॉ. देवेन्द्र आमेटा ने विचार व्यक्त कर सुझाव दिए।

बैठक में सत्र 2015-16 का प्रतिवेदन एवं सत्र 2016-17 में प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया गया। संचालन डॉ. बी.एल. श्रीमाली ने किया जबकि धन्यवाद डॉ. सरोज गर्ग ने दिया। विभिन्न जिलों से आए जिला शिक्षा अधिकारी आई.ए.एस.ई, सीटीई एवं डाईट संस्थानों के प्राचार्य, संकाय सदस्य उपस्थित थे। डॉ. शशि चितौड़ा ने बताया कि बाल अधिकार एवं किशोर अवस्था शिक्षा, शांति के लिए शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, पुस्तकालय विज्ञान शिक्षा, केरियर एवं क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षा, कम्प्यूटर एवं श्रृव्य दृश्य शिक्षा, मूल्य शिक्षा, स्वास्थ एवं योग शिक्षा, सहित विभिन्न विषयों पर पूरे वर्ष कार्यशालाएं आयोजित की जायेगी, जिनमें डूंगरपुर, बांसवड़ा, चितौड़गढ़, राजसमंद, सिरोही, भीलवाड़ा जिलों के शिक्षक भाग लेंगे। पूरे वर्ष राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के व्याख्यान भी आयोजित किए जायेंगे।

कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने उच्च शिक्षा के शिक्षकों से आव्हान किया कि प्रोफेसर 50 फीसदी टीचिंग पर तो 50 फीसदी रिसर्च पर ध्यान दे। ज्यादा से ज्यादा क्वालिटी एज्यूकेशन व शोध वर्क को महत्व दें तथा विद्यार्थियों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करें।

**आत्म कथ्य :**

# 15 करोड़ गायों की रक्षा का संकल्प

**-रतनलाल सी. बाफना-**

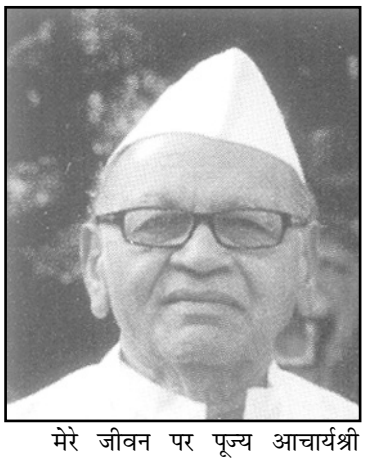

मेरे जीवन पर पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी महाराज का महान उपकार रहा है। उनके दर्शन, वंदन और उपदेशों से मेरे जीवन में क्रांतिकारी सकारात्मक परिवर्तन हुए। मेरे मन में बहुत कुछ करने की भावनाएं जागी। मैं उनके जीवनकाल में विशेष कुछ नहीं कर पाया। उनकी पावन स्मृति में स्थायी महत्व के कार्य करने की भावना मन में बनी रही।

वर्ष 1996 में मेरे कण्ठ (गले) में अवरोध उत्पन्न हो गया। चिकित्सकों की राय के मुताबित गले में ऑपरेशन आवश्यक था। उस समय वैसे ऑपरेशन की सुविधा भारत में नहीं थी। अत: अमेरिका में मेरे गले के ऑपरेशन का निर्णय हुआ। उस वक्त मेरी सद्भावना सत्संकल्प में बदल गई। मैंने संकल्प किया कि ऑपरेशन की सकुशल सम्पन्नता और स्वस्थ हो जाने पर मैं 500 गायों को अभयदान (जीवनदान) दूंगा। जीवन की खुशहाली में अच्छी भावनाओं और पुनीत संकल्पों का अनुकूल प्रभाव होता है। मैं स्वस्थ सामान्य होकर स्वदेश लौट आया।

उन्हीं दिनों कसाइयों के चंगुल से 307 गायों को मैंने विधिसम्मत तरीके से मुक्त कराया। जिन गायों का क्रूरतापूर्वक कत्ल किया जाना था, उनके प्राणों की रक्षा से मुझे हार्दिक संतोष मिला। गोरक्षा के साथ गोपालन जरूरी था। इस विचार के साथ 1996 में यह घटना गोशाला के श्रीगणेश का निमित्त बन गई। इस क्रम में मैंने और भी गायों को कत्लखानों में जाने से विधिपूर्वक रोका और उन्हें संरक्षण प्रदान किया। इस प्रकार मेरा 500 गायों को बचाने का शुभ संकल्प जल्दी ही पूरा हो गया। प्राणी रक्षा का यह एक ऐसा प्रशस्त भाव या संकल्प है, जिसकी पूर्ति में प्रकृति भी मदद करती है।

मेरा संकल्प केवल हजार गायों को रखकर गोशाला चलाने का ही नहीं रहा। मेरा सपना और संकल्प तो यह है कि देश की 15 करोड़ गायों की रक्षा कैसे हो? गोशालाएं व्यक्ति व समाज की जरूरतों के साथ कैसे जुड़ें? देश की शासकीय, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था ऐसी हो कि गोहत्या पर सदा-सदा के लिए पूर्ण प्रतिबंध लगे। भारत जैसे कृषिप्रधान और ऋषिप्रधान देश में सर्वत्र गोपालन व गोसंवर्धन हो। गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए।

गोशाला के लिए मुझे जलगांव से छह किलोमीटर दूर गांव कुसुम्बा की जमीन उपयुक्त लगी। यह गांव विश्वविख्यात अजंता की गुफाओं को जाने वाले जलगांव-अजंता मार्ग पर स्थित है। सन् 1998 में मैंने वहीं जरूरी व्यवस्थाओं के साथ कुछ गोवंश को रखकर गोभक्त श्री केशरीचन्दजी मेहता के करकमलों से गोशाला का भूमिपूजन करवाया। वह शुभारंभ आज अनेक प्रेरक आयामों के साथ देश का एक अनुपम दर्शनीय केन्द्र बन चुका है।

गोशाला के विस्तार के साथ पशुओं की संख्या बढ़कर वर्तमान में लगभग 3500 हो चुकी है। इस संख्या में मुख्यत: तो गोवंश ही है। अन्य पशुओं में भैंसे, पाड़े व घोड़े भी हैं। तीर्थ में स्थानाभाव के कारण कुछ पशु अन्यत्र भी रखे गये हैं जहां हमारी ओर से गोसेवकों द्वारा उनकी उचित देखभाल की जाती है। विकास और विस्तार का यह सिलसिला निरंतर आगे बढ़ रहा है।

अहिंसा तीर्थ में गायें बहुत सुखपूर्वक रहती हैं। प्रजनन और दूध प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार के कृत्रिम उपाय यहां सर्वथा निषिद्ध हैं। पारंपरिक तरीके से दूध निकाला जाता है और पारंपरिक तरीकों से ही दही और घी बनाये जाते हैं। गाय के दूध, दही, घी, मूत्र, गोबर आदि पदार्थों पर विविध तरीकों से अनुसंधान किये जा रहे हैं जो सबके लिए लाभदायी बन रहे हैं।

तीर्थ को आकर्षक, सुविधायुक्त और रमणीय बनाने के लिए शिक्षा, लोकरुचि, अध्यात्म और संस्कृति से संबंधित अनेक आयाम जोड़े गये हैं। उद्यान, बाल वाटिका, ध्यान केन्द्र, कबूतर गृह, शाकाहार, म्यूजियम, विश्व के अद्वितीय उदाहरण, भारत माता की प्रतिमा, आकर्षक झांकियां, महापुरुषों की मूर्तियां, अतिथि गृह, कैंटीन इत्यादि। इन सबके साथ ही तीर्थ में स्थान-स्थान पर चुने हुए प्रभावशाली शिक्षाप्रद दोहों, काव्य-पंक्तियों और सूक्तियों के फलक लगे हैं। ये हृदयस्पर्शी सूक्ति-फलक नई सत्प्रेरणाओं का संचार करते हैं।

आप इस तीर्थ में पधारकर यहां संचालित गतिविधियों का निरीक्षण करें। तीर्थ का अवलोकन करने पर आप संस्कृति, प्रकृति और गाय के महत्व को समझेंगे तथा समस्त प्राणी जगत से प्यार करना सीखेंगे। यहां पधारने वालों से मेरी गुजारिश है कि वे शाकाहारी बनें और जो शाकाहारी हैं, वे शाकाहार प्रचार में अपना योगदान करें। ऐसा करके मूक, निरपराध और भोले-भाले प्राणियों को जीवनदान दिया जा सकेगा एवं देश-दुनिया को अशांति व प्रदूषण से मुक्त किया जा सकेगा। अहिंसा तीर्थ साधना, सेवा और संस्कृति का एक पावन मंदिर बन गया है। इस तीर्थ में मेरे परिवारजन ही न्यासी (ट्रस्टी) हैं। मेरे बाद भी उन पर तीर्थ के रखरखाव का दायित्व रहेगा।

# रैडिसन उदयपुर को मिला बेस्ट बिजनेस होटल अवार्ड

**उदयपुर।** रैडिसन उदयपुर को हाल में दिल्ली में आयोजित, 10वें वार्षिक टुडेज ट्रैवलर अवार्ड्स 2016 में बेस्ट बिजनेस होटल अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड विनोद दुग्गल, मणिपुर के पूर्व राज्यपाल, केंद्रीय गृहसचिव, राष्ट्रीय आपदा प्रबंध प्राधिकरण के सदस्य से रैडिसन उदयपुर के महाप्रबंधक रिचर्ड बरुआ ने ग्रहण किया। समारोह में केंद्रीय युवा मामले और खेल राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विजय गोयल भी उपस्थित थे।

रैडिसन उदयपुर के महाप्रबंधक रिचर्ड बरुआ ने कहा कि इस प्रतिष्ठा वाले पुरस्कार से सम्मानित किया जाना हमारे लिए बेहद गर्व के क्षण हैं। यह पुरस्कार हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है ताकि हम अपने प्रयासों में और अच्छा कर सकें।

इस भव्य आयोजन में ट्रैवेल और हॉस्पीटैलिटी उद्योग के 300 से ज्यादा सर्वोच्च स्तर के मैनेजमेंट पेशेवर के साथ-साथ कॉरपोरेट विश्व के प्रमुख शामिल हुए। इस आयोजन में एयर इंडिया के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक अश्विनी लोहानीय विनोद अजमेरा, आईएएस, कमिश्नर राजस्थान फाउंडेशन, उद्योग विभाग और राजस्थान सरकार में प्रोटोकोल के अतिरिक्त प्रमुख डॉ. एके मनोचा, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, आईआरसीटीसी जैसी हस्तियां शामिल थीं। कॉरपोरेट क्षेत्र से संजय ग षि, प्रेसिडेंट, अमेरिकन एक्सप्रेस दक्षिण एशियाय बिनॉय जैकब, चेयरमैन ट्राईयूनप्रोजक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, आलोक लाल, डायरेक्टर माइक्रोसॉफ्ट इंडियाय राजन बहादुर, प्रबंध निदेशक और सीईओ, केयर इंडिया तथा कई अन्य शामिल हैं। इस आयोजन की साझेदारी और इसका समर्थन फिल्म टूरिज्म सेमिनार पार्टनर एंड गोल्ड पार्टनर आईआरसीटीसीय गोल्ड पार्टनर अरुणांचल प्रदेश टूरिज्म, फिल्म टूरिज्म सेमिनार पार्टनर गुजरात टूरिज्मय चौरिटी पार्टनर केयर इंडिया, हेल्थकेयर पार्टनर, अपोलो हॉस्पीटल्सय हॉस्पीटलिटी पार्टनर ताज पैलेस नई दिल्ली और टूरिज्म फाइनेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (टीएफसीआई) ने किया।

### श्री सत्य सांई हार्ट हॉस्पिटल द्वारा निशुल्क हृदयरोग निदान शिविर आयोजित

# 25 दिन का बच्चा भी आया हृदय रोग निदान शिविर में

**उदयपुर।** राजकोट के श्री सत्य सांई हार्ट हॉस्पिटल द्वारा रविवार को हृदय रोग निदान शिविर आयोजित किया गया। शिविर में एकबारगी चिकित्सकों को भी आश्चर्य हुआ जब उनके सामने मात्र 25 दिन का नवजात भी आया जिसे हृदय की तकलीफ थी। सत्य सांई सेवा संगठन के साझे में उदयपुर के चित्रकूट नगर स्थित रॉकवुड हाई स्कूल में आयोजित हुए इस शिविर का उद्घाटल बालक प्रिंस ने किया।

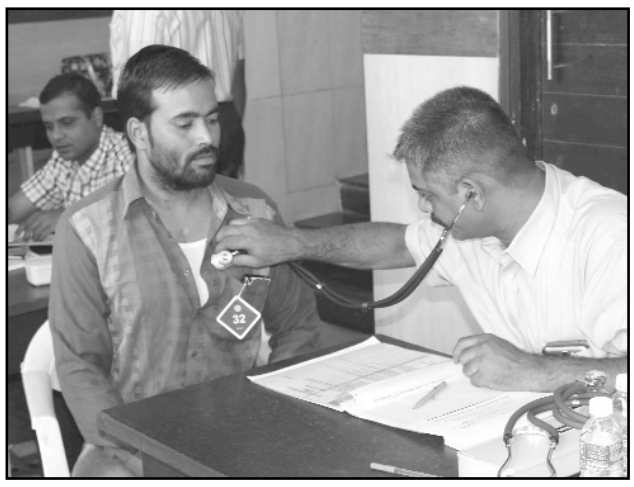

मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि ट्रस्ट ने राजस्थान में इतिहास रचा है। ट्रस्ट ने गत वर्ष 450 रोगियों के निशुल्क ऑपरेशन कर राजस्थानवासियों का दिल जीत लिया। गृहमंत्री ने इस पुनीत कार्य में हरसंभव सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। कटारिया ने हॉस्पिटल के डॉ. सर्वेश्वर, डॉ. सौरभ शर्मा, डॉ. वर्षा बेन शाह, डॉ. धीरेन्द्र दवे, डॉ. विशाल चांगेला, डॉ. कुमार, डॉ. भावेश ओझा तथा विशाल प्रजापत का सम्मान किया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में गांधी कॉर्पोरेशन के हेमू गांधी, जवेरी एंड ब्रदर्स के कंचन जवेरी, आईआईएम ग्रुप के एमडी नितिश सोनी, राजस्थान के पूर्व मुख्य अभियंता अनिल शर्मा, रॉकवुड हाईस्कूल की अध्यक्ष अलका शर्मा उपस्थित थे।

प्रशांति एवं रिसर्च फाउंडेशन द्वारा संचालित श्री सत्य सांई हार्ट हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी मनोज भिमानी ने कहा कि सत्य सांई बाबा का मानना था कि शिक्षा और स्वास्थ्य आमजन का अधिकार है। उसे यह निशुल्क मिलना ही चाहिए। हर रोग का कहीं न कहीं निशुल्क इलाज मिल जाता है लेकिन हृदयरोग का कहीं निशुल्क इलाज नहीं था। इसे बाबा ने इसलिए शुरू किया ताकि गरीब से गरीब को भी इसका लाभ मिल सके। हम अब तक दस हजार से अधिक ऑपरेशन कर चुके हैं। इस वर्ष हमारा लक्ष्य 1400 ऑपरेशन करने का है। यहां चयनित रोगियों का राजकोट चिकित्सालय में ऑपरेशन किया जाएगा। संगठन के राज्य अध्यक्ष मनोज बतरा ने संगठन के उद्देश्यों तथा गतिविधियों का उल्लेख करते हुए सत्य सांई बाबा का जीवन परिचय दिया। सत्य सांई सेवा संगठन उदयपुर के परमवीर सिंह ने बताया कि शिविर में 940 से अधिक रजिस्ट्रेशन हुए। करीब डेढ़ हजार से अधिक मरीजों की पुरानी रिपोर्ट्स के आधार पर जांच कर सलाह दी गई। इनमें 25 दिन से डेढ़ माह तक के करीब 10 बच्चे भी शामिल थे। दूरदराज से आए रोगियों के रहने, खाने-पीने की सुविधा संगठन की ओर से की गई थी। कार्यक्रम में अस्पताल से लाभान्वित राजकुमार रोत एवं प्रिंस रोत ने निशुल्क ऑपरेशन के अनुभव बांटे। छगनलाल ने भी अपनी पत्नी के निशुल्क ऑपरेशन के अनुभव बताए।

उदयपुर समिति के समन्वयक मनमोहन शर्मा ने बताया कि बिल्कुल अनुशासित रूप से शिविर सफलतापूर्वक चलने का कारण संगठन के राज्य भर से आए करीब 250 से अधिक सेवाधारक रहे जिन्होंने दो दिन तक सेवाएं दी। हॉस्पिटल से 40 चिकित्सकों व नर्सेज का स्टाफ यहां पहुंचा जिन्होंने रोगियों को बड़ी आत्मीयता से संभाला।

# होनहार बालिका मुस्कान का निधन

**उदयपुर।** उदयपुर के जानेमाने पत्रकार श्री महेश व्यास की 14 वर्षीय होनहार पुत्री मुस्कान व्यास का 7 अगस्त 2016 रविवार को आकस्मिक निधन हो गया। सुश्री मुस्कान यथा नाम तथा गुण लिए थी। वह सिडलिंग मॉडल पब्लिक स्कूल की 10वीं कक्षा में अध्ययनरत थी। बहुमुखी प्रतिभा की धनी सुश्री मुस्कान की बचपन से ही ड्राइंग, मांडणा, कैलीग्राफी, मार्डन स्कैच, पेंटिंग में गहरी रूचि थी। समय-समय पर इनसे संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उसने भाग लिया और कई पुरस्कार अर्जित किये।

प्रारंभ में ही अखबारों में पढ़कर उसने यह प्रेरणा ग्रहण की कि वह भी अपना नैत्रदान कर किसी अंधे व्यक्ति का प्रकाश बनने में सहायक होगी। फलस्वरूप गतवर्ष ही उसने नेत्रदान करने का संकल्प लिया था। उसकी मृत्युपरांत महेशजी ने उसके संकल्प की रक्षा करते हुए राजस्थान के उदयपुर चैप्टर नैत्र बैंक में नैत्रदान करवाया। उसके निधन की खबर सुनते ही पत्रकार जगत में शोक की लहर छा गई। बड़ी संख्या में समाज के विभिन्न तबके के लोगों ने उसकी अन्त्येष्टि में भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि 19 अगस्त को उसका जन्म दिन पड़ता है। इस बार उसका मन था कि वह अपने सभी सगे-समधियों तथा सहपाठी छात्राओं को अपने घर पर आमंत्रित कर बड़े पैमाने पर इसका आयोजन करती किंतु हरि इच्छा प्रबल होती है। रहने के नाम पर अब तो केवल उसकी स्मृतियां ही शेष हैं।

# पेरामाउंट स्टेशनर्स के नाम खुला 40 इंच का एलईडी टीवी

**उदयपुर।** पेपर निर्माण की अग्रणी कंपनी जे के पेपर लि. द्वारा निर्मित विभिन्न ब्रांडों के पेपर्स में जे के स्पार्कल नामक ब्रांड पर स्कैच एंड विन ऑफर का लक्की ड्रा स्थानीय पेरामाउंट स्टेशनर्स के नाम 40 इंच का सोनी एलईडी टीवी निकला। गुरूवार को जे के पेपर लि. के वाइस प्रेसीडेंट सेल्स एंड मार्केटिंग संतोष वाकलू, नोर्थ जोन सेल्स के चीफ मैनेजर विवेक अब्रोल, वरिष्ठ ऑफिसर सेल्स अमित चौहान एवं जे के पेपर के उदयपुर संभाग के अधिकृत डिस्ट्रीब्यूटर पार्श्वकल्ला पेपर्स के डॉ. तुक्तक भानावत ने पेरामाउंट स्टेशनर्स के प्रोपराइटर महावीरप्रसाद जावरिया, रोहित जावरिया एवं नितेश जावरिया को एलईडी टीवी प्रदान किया।

इस अवसर पर जे के पेपर लि. वाइस प्रेसीडेंट सेल्स एंड मार्केटिंग संतोष वाकलू ने कहा कि कंपनी के वाइच चैयरमेन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर हर्षपति सिंघानिया की मंशा है कि कंपनी समय-समय पर विभिन्न योजनाओं के माध्यम से डीलर्स एवं रिटेलर्स का ध्यान रखते हुए उन्हें लाभ पहुंचाने की चेष्टा करेगी। राजस्थान में पहलीबार इस स्कीम के अंतर्गत उदयपुर के पेरामाउंट स्टेशनर्स को 40 इंच की एलईडी टीवी हासिल हुई है। कंपनी चाहती है कि हर संभाग में इस तरह का लाभ रिटेलर्स और डीलर्स को प्राप्त होता रहे।

# स्पंदन देगा देशभर के 6 साल तक के जरूरतमन्द बच्चों को निशुल्क इलाज

**उदयपुर।** राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त मॉ भगवती विकास संस्थान द्वारा संचालित स्पंदन एवं पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल की ओर से देश के 6 वर्ष तक के जरूरतमन्द बच्चों को निशुल्क मेडीकल, सर्जीकल एवं अन्य चिकित्सा सुविधाए उपलब्ध कराई जाएगी।

स्पंदन, मां भगवती विकास संस्थान के संस्थापक संचालक योगगुरू देवेन्द्र अग्रवाल ने बताया कि स्पंदन भारत का पहला ऐसा विशेषज्ञ शिशु गृह होगा जहां पर देशभर के ऐसे जरूरतमन्द बच्चे जिन्हें गरीबी के चलते उच्चस्तरीय

चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नही हो पाती है उन्हें विश्व स्तरीय मेडीकल, सर्जीकल एवं अन्य चिकित्सा सुविधाए उपलब्ध कराई जाएगी। इस विशेषज्ञ शिशु गृह में देशभर के बच्चों के लिए वेवसाइट के माध्यम देश के किसी भी कोने से जरूरतमन्द व्यक्ति 6 साल तक के बच्चे की किसी भी तरह की बीमारी के इलाज के लिए सम्पर्क कर सकता है।

योगगुरू अग्रवाल ने बताया कि कई व्यक्ति या संस्था ऐसे गरीब बच्चों का इलाज कराना चाहते हैं लेकिन उनके मन में यह शंका रहती हैं कि हमारे पैसो का सही उपयोग होगा कि नहीं। इसके लिए स्पंदन कि वेबसाइट पर उस बच्चे की बीमारी, किस हॉस्पीटल में उसका इलाज होगा एवं उस पर कितना खर्चा आएगा यह सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध होगी जिससे कि व्यक्ति या संस्था सीधा पैसा उस हॉस्पीटल के खाते में जमा करा सके। स्पंदन द्वारा किसी भी बच्चे के ईलाज के लिए किसी भी प्रकार का स्वयं द्वारा लेनदेन नहीं किया जाएगा वह केवल दानदाता और गरीब बच्चें के इलाज के लिए सेतु का कार्य करेगा।

पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल के चैयरमेन राहुल अग्रवाल ने बताया कि स्पंदन के इस विशेष कार्यक्रम में जाति और धर्म से परे देश के ऐसे सभी जरूरतमन्द बच्चों को मेडीकल, सर्जीकल एवं अन्य तरह की चिकित्सा सुविधाओं का निशुल्क लाभ उठा सकते है।

# जीएसटी : सिर्फ एक शुरूआत है.....

**-प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत-**

भारतीय कर इतिहास में 3 अगस्त 2016 का दिन अति महत्त्वपूर्ण हो गया क्योंकि सन् 2000 में वाजपेयी सरकार द्वारा जी.एस.टी. के लिए प्रारम्भ किया गया संविधान संशोधन कार्य मोदी सरकार ने कर दिखाया। वाजपेयी सरकार ने असीमदास गुप्ता की अध्यक्षता में जीएसटी के लिए इम्पावर्ड कमेटी का गठन किया था। 2006 में पी. चिदम्बरम ने अपने बजट भाषण में जीएसटी का उल्लेख करते हुए अप्रेल, 2010 का लक्ष्य रखकर इस कार्य में सक्रियता का परिचय दिया। मोदी सरकार ने आनन-फानन में 18 दिसम्बर, 2014 को इस बिल को केबिनेट ने मंजूरी दे दी किन्तु आगे की राह आसान नहीं रही।

काफी परेशानियों के बाद मोदी सरकार के नरम रूख अपनाने से जीएसटी के लिए 122वां संविधान संशोधन बिल, 2014 राज्यसभा में बहुमत से पारित करने में सफल रही। इसे लोकसभा में पहले भी पास करा लिया था और राज्यसभा द्वारा किये गये संशोधन के बाद इसे पुन: 8 अगस्त को लोकसभा के ध्वनिमत से पारित कर दिया। इससे सरकार को जीएसटी बिल को पास कराने की राह आसान हो गयी है किन्तु यह तो सिर्फ एक शुरूआत है। आगे कई चुनौतियों का सामना करना होगा। मोदी सरकार को देश के कम से कम 15 राज्यों की विधानसभाओं में इस बिल को दो-तिहाई बहुमत से पारित कराना होगा।

इस कार्य में मोदी सरकार को कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। फिर भी कुछ बाधाएं हैं। राज्यों द्वारा विधानसभा में बिल पारित करते समय स्टेट जीएसटी दर निर्धारण एक मुख्य बाधक तत्त्व बन सकता है। चूंकि जीएसटी उपभोग बिन्दु पर लगता है अत: निर्माणकारी राज्य गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक आदि क्षतिपूर्ति की मांग कर सकते हैं। सरकार की स्थिति अब और विकट हो गयी क्योंकि राज्यसभा ने निर्माणकारी राज्यों को मिलने वाली 1 प्रतिशत क्षतिपूर्ति के प्रावधान को समाप्त कर दिया है। इस समस्या का समाधान केन्द्रीय वित्तमंत्री अरूण जेटली को कुशलतापूर्वक करना होगा।

केन्द्र सकार को संशोधन बिल पर राज्यसरकारों की सहमति मिलने के पश्चात् राष्ट्रपति के हस्ताक्षर करवाने होंगे। इसके पश्चात् ही जीएसटी बिल का खाका तैयार हो पायेगा। केन्द्र सरकार को तीन बिल लोकसभा एवं राज्यसभा में पारित करवाने होंगे। केन्द्रीय जीएसटी बिल, राज्य जीएसटी बिल एवं इन्टीग्रेटेड जीएसटी बिल। इन बिलों के सृजन में भी कई समस्याये आयेंगी जैसे जीएसटी दर क्या होनी चाहिये? कम्पाउण्डींग लिमिट कितनी हो? छूट की न्यूनतम सीमा कितनी हो आदि? जीएसटी में 18 करों का समावेश किया जा रहा है ताकि एक कर प्रणाली को सम्पूर्ण देश में लागू किया जा सके। इन करों में कुछ कर केन्द्र सरकार द्वारा नियंत्रित होते हैं और कुछ राज्य सरकार द्वारा।

ऐसी स्थिति में एक कर का निर्धारण करना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि कर की दर ऐसी हो जिससे किसी भी राज्य सरकार को राजस्व की हानि न हो तथा करदाताओं पर भी अतिरिक्त बोझ न पड़े। अत: जीएसटी की मानक दर निर्धारित करने के लिए भी केन्द्रीय वित्तमंत्री को जीएसटी परिषद एवं राज्य वित्तमंत्रियों की इम्पावर्ड कमेटी के मध्य सहमति बनाने के लिए प्रयास करने होंगे। वर्तमान में 18 प्रतिशत सहमति बनती नजर आ रही है किन्तु अनिश्चितता के बादल अभी भी मंडरा रहे हैं। यह कानून जम्मू एवं कश्मीर पर

लागू नहीं होता है। राज्य को पृथक संविधान संशोधन पास करना होगा।

कर विशेषज्ञों का मानना है कि जीएसटी बिल आने के बाद छोटे एवं मंझले उद्योग पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। वर्तमान कर व्यवस्था में बृहद उद्योग की तुलना में छोटे उद्योगों को कई कर रियायतें प्राप्त हैं, जो जीएसटी में उपलब्ध नहीं हैं। छोटे उद्योगों को जीएसटी प्रावधानों की अनुपालना करने के लिए कर विशेषज्ञों से सलाह लेनी होगी क्योंकि प्रस्तावित जीएसटी बिल में जटिल प्रक्रिया दे रखी है। एक महीने में चार बार रिटर्न दाखिल करना होगा जबकि वर्तमान में तिमाही रिटर्न भरना होता है। इन कर विषेशज्ञों को मोटी रकम अदा करनी होगी। अपने उद्योगों में सूचना प्राद्योगिकी पद्धति भी विकसित करनी होगी क्योंकि कर भुगतान का सम्पूर्ण कार्य ऑन लाइन होगा। परिणामस्वरूप उनके उत्पादों की लागत बढ़ने की पूरी सम्भावना है। वृहद स्तर के उद्योगों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाने के कारण छोटे उद्योगों पर अस्तित्त्व बनाये रखने का संकट पैदा हो जायेगा। जब कीमत में ज्यादा अन्तर नहीं होगा तो उपभोक्ता वृहद उद्योग के ब्राण्डेड उत्पाद खरीदना ज्यादा पसन्द करेंगे। इससे बड़े उद्योगों का लाभ बढ़ेगा और सामाजिकों में आय विषमता का दायरा बढ़ता जायेगा।

जीएसटी बिल आने में एक सम्भावना यह भी व्यक्त की जा रही है कि पिछड़े राज्यों की अपेक्षा विकसित राज्यों को ज्यादा फायदा होगा। 'एक देश एक कर' के सिद्धांत से पिछड़े राज्यों में निवेश की सम्भावना न्यूनत्तम हो जायेगी। वर्तमान कर व्यवस्था में पिछड़े राज्यों को कई कर छूट के प्रावधान उपलब्ध हैं जो जीएसटी आने से समाप्त हो जायेंगे। राज्य सरकारें यह भी मांग कर रही हैं कि पेट्रोलियम उत्पाद एवं एल्कोहल को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा जाये। ऐसी स्थिति में 'एक देश एक कर' अवधारणा सार्थक होती नजर नहीं आयेगी।

यह भी आशंका व्यक्त की जा रही है कि कुछ उत्पादों पर जीएसटी की दर कम होने के बावजूद निर्माता उसका लाभ आम उपभोक्ता तक नहीं पहुंचायेगा परणिामस्वरूप महंगाई बढ़ने की पूरी सम्भावना है। जीएसटी एक देश एक कर का नारा लगाने में बहुत अच्छा लगता है पर भारत जैसे देश में एक-एक देश के बराबर 29 राज्य, भिन्न राजनैतिक विचारधारा और आर्थिक तकनीकी उलझनों को सुलझाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

यह सही है कि जीएसटी बिल आने से सरकार को कई चुनौतियों का सामना करना होगा किन्तु इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को कई लाभ होंगे। एक बाजार एक दर की अवधारणा विकसित होगी परिणामस्वरूप देश की जीडीपी में 2 प्रतिशत की वृद्धि की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। देश में विनियोग बढ़ेगा, मेक इन इण्डिया की योजना सशक्त होगी, कर दायरा विस्तृत होगा। कर चोरी में कमी आने से सरकार का राजस्व बढ़ेगा, कर का प्रशासनिक कार्य आसान होगा। कर संग्रहण लागत में कमी आयेगी तथा व्यवसायियों की लॉजिस्टिक एवं परिवहन लागतों में 35 प्रतिशत से 40 प्रतिशत की कमी आयेगी क्योंकि वर्तमान में एक राज्य से दूसरे राज्य में माल ले जाने पर प्रवेश कर सहित कई कर लगते हैं जो जीएसटी आने के बाद समाप्त हो जायेंगे।

परिवर्तन की राह चुनौतीपूर्ण होती है किन्तु राष्ट्रहित में इन चुनौतियों का सामना दृढ़तापूर्वक करना होगा। भारत राष्ट्र को समृद्ध राष्ट्र की श्रेणी में लाने के लिए जीएसटी को दृढ़तापूर्वक लागू करना होगा। सभी राजनैतिक दलों को राजनीति से ऊपर उठकर बिल का समर्थन करना चाहिए और आनेवाली चुनौतियों का समाधान मिलजुल कर करना होगा। सरकार को भी राष्ट्रहित में जीएसटी बिल को अन्तिम रूप देने के लिए 'सबका साथ, सबका विकास' जैसे सोच पर कथनी और करनी में समरूपता स्थापित करने के प्रयास करने चाहिए।

## जय दृष्टि आई हॉस्पीटल का उद्घाटन

**उदयपुर।** जय दृष्टि आई हॉस्पीटल के रेजीडेन्सी रोड़ स्थित नवीन परिसर का जयदेव पण्ड्या व श्रीमती रेखा देवी पण्ड्या ने फीता काट उद्घाटन किया।

हॉस्पीटल के निदेशक डॉ. उपवन पण्ड्या ने बताया कि अब रोगियों को एक ही छत के नीचे सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होगी। डॉ. पण्ड्या ने बताया कि डायबिटीक रेटिनोपैथी के लिए आगामी 22 अगस्त को क्लिनिक पर स्क्रीनिंग कैम्प भी लगाया जाएगा, जिसमें रेटिनोपैथी स्पेशलिस्ट डॉ. शर्वा पण्ड्या की सेवाएं निशुल्क उपलब्ध रहेगी। कैम्प में निशुल्क ब्लड शुगर की जांच सहित डायबिटीक रैटिनोपैथी से सम्बन्धित जांचें निशुल्क की जाएगी।

रेटिना रोग विशेषज्ञ डॉ. शर्वा पण्ड्या ने बताया कि इस हॉस्पीटल में उन नेत्र रोगियों को भी लाभ मिलेगा जो भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना धारक हैं। हॉस्पीटल में केटरेक्ट फेको सर्जरी, कोर्निया ट्रांसप्लान्ट, कालापानी की लेज़र सर्जरी, नासूर का एन्डोनेज़ल, झिल्ली का प्रत्यारोपण, ऑपेरशन की सुविधा उपलब्ध है। उद्घाटन अवसर पर आरएनटी मेडकील कॉलेज के प्राचार्य डॉ. डी.पी. सिंह, डॉ. एच.एल. खमेसरा, डॉ. जी.एल. डाड, डॉ. एम.एम. मंगल, डॉ. चिरायु पामेचा मौजूद थे।

## तेजाब पीड़ित महिलाओं के लिए अनूठी पहल

**उदयपुर।** महिला सशक्तिकरण के लिए स्थापित छांव फाउण्डेशन द्वारा संचालित शिरोज हेंगआउट कैफे राज्य का ऐसा प्रथम कैफे होगा जो उदयपुर में हाथीपोल स्थित अरवाना शॉपिंग डेस्टीनेशन में इसी माह में न केवल प्रारम्भ होगा वरन् यह राज्य की एसिड अटैक महिलाओं की सहायता के लिए केन्द्र बिन्दु भी बनेगा।

अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा की पत्नी मिशेल ओबामा से अन्तर्राष्ट्रीय साहसिक महिला के खिताब से पुरूस्कृत शिरोज हेंगआउट ग्रुप की लक्ष्मी ने प्रेसवार्ता में बताया कि इस कैफे को खोलने के पीछे मुख्य उद्देश्य एसिड अटैक सर्वाइवर्स महिलाओं को हर प्रकार की सहायता उपलब्ध कराना है। लक्ष्मी ने बताया कि उदयपुर में इस कैफे से राज्य की उन एसिड अटैक सर्वाइवर्स महिलाओं को भी जोड़ा जाएगा जो अब तक संकोच के कारण घर की चारदीवारी से बाहर नहीं निकल पाई थी। ऐसी महिलाओं को यहां कार्य उपलब्ध करवा कर उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत की जाएगी।

## सील्बी इण्डस्ट्रीज के पहली तिमाही में शानदार परिणाम

**उदयपुर।** गाजियाबाद स्थित अपने अति-आधुनिक निर्माण संयंत्र में पोलीस्टर यार्न तथा एम्ब्रायडरी थ्रेड के निर्माण में संलग्न बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध सील्बी इण्डस्ट्रीज लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2016 की पहली तिमाही में दर्ज 15.81 करोड रूपए के विक्रय के मुकाबले वित्त वर्ष 17 की पहली तिमाही में दौरान 46.67 प्रतिशत अधिक 23.19 करोड रूपए की बिक्री दर्ज की है।

वित्तीय वर्ष 2016 की पहली तिमाही के दौरान कंपनी का ईबीआईटीडीए 0.34 करोड़ रूपए था जो वित्त वर्ष 16 की पहली तिमाही के दौरान 271 प्रतिशत उछलकर 1.28 करोड रूपए हो गया है। कंपनी ने वित्त वर्ष 17 की तिमाही के दौरान ईबीआईटीडीए मार्जिन में 400 बीपीएस विस्तारीकरण की सूचना दी। पिछले साल इसी तिमाही की 0.17 करोड़ के करोपरांत लाभ की तुलना में वित्त वर्ष की पहली तिमाही में कंपनी का करोपरांत लाभ बढ़कर 0.98 करोड़ रूपए हो गया है। कंपनी ने रिसाइकिल्ड फाइबर से पोलीस्टर यार्न के निर्माण में अनुबंध निर्माण द्वारा अपनी क्षमता को दोगुना कर अपना ध्यान लाभ बढ़ाने तथा रोमांचक वृद्धि संभावनाओं पर केन्द्रित रखा है।

11 रूपए के मौजूदा बाजार मूल्य वित्त वर्ष 17 ई ईपीएस पर कंपनी का स्टॉक व्यापार 8.5 गुना बढ़ा है। सीब्ली ने हाल ही में बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज को सूचित किया है कि वह पंजाब ,हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश स्थित 3 निर्माताओं से बातचीत तथा जॉब वर्क आधार पर रनिंग मिल्स से यार्न प्राप्त कर रिसाइक्ल्ड फाइबर का उपयोग कर विशिष्ट रूप से सीब्ली के लिए 100 प्रतिशत यार्न का निर्माण करने के लिए अपनी मौजूदा पोलीस्टर यार्न निर्माण क्षमता को 10,000 स्पिण्डल्स से बढ़ाकर 20,000 स्पिण्डल्स करेगी, जिसके बाद उसकी लाभप्रदता में तेजी से वृद्धि होगी।

पोथीखाना

# 'निर्भय मीरां' पर तीन टीप

## चेतना, अन्तश्चेतना और पुराचेतना का समन्वय

**-डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर-**

'निर्भय मीरां' डॉ. महेन्द्र भानावत के दीर्घकालीन शोध का परिणाम है। लोकचेतना में मीरां विषयक सामग्री का संकलन वे एक लंबे समय से कर रहे थे। अब तक मीरां का जो परिचय सामने आया था उससे भिन्न रूप अनेक पुष्ट तथ्यों के साथ वे सामने लाए हैं। अत: परंपरावादियों और तथ्य आकलन कर्त्ताओं को तो चौंकना ही था। वे चौंके भी। इससे बड़ा लाभ यह हुआ, मीरां-सागर में ज्वार-भाटा उठा। जनमानस की जागृत मीरां-चेतना ने मनीषी समाज को पुन: सोचने के लिए विवश किया।

मीरां स्वयं त्रिकाल है। उसकी अखंड ज्योति सदा आलोकित करती रहने वाली है। वह कृष्णमयी है। सदा कृष्ण के साथ रहने वाली है। कृष्ण में तिरोहित होने वाली नहीं। यह सत्य है। ऐसा सत्य जिससे शील और सौंदर्य को अलग नहीं किया जा सकता। डॉ. भानावत ने चेतना, अन्तश्चेतना और पुरा चेतना को एक साथ समन्वित कर मीरां-मन के अंत:प्रकाश को उद्घाटित किया है।

डॉ. महेन्द्र मीरां की तलाश लोक में करते घूमे हैं। घूमंतु साहित्य के प्रवर प्रणेता महापंडित राहुल सांकृत्यायन की तरह। निर्जन में बैठे संत-तपस्वी से लेकर मंदिर-मंदिर फैले मीरां-प्रकाश से वे अंदर तक जुड़े हैं। दिव्यता की घन-घटाएं उनमें भी कौंधी हैं। लोकानुभूतियों और लोककथाओं में बहता मीरां-अमृत पाकर वे भी निढ़ाल हुए हैं। सत्य-शोध के साधक के सामने तथ्य नहीं, तत्व क्रियाशील होते हैं। ऐसे में भावनाओं का अतिरेक ही डॉ. भानावत की मीरां को समझने की घनीभूत गहनता की अनुभूति कराता है।

'निर्भय मीरां' एक भक्त-योगिनी की मर्म गाथा है। भक्त तर्क नहीं जीता। वह तो तर्कों को तिरोहित कर निर्मल आलोकीय अन्तर्धारा में बहता रहता है आत्म-विस्मृत होकर। उसमें 'स्व' और 'पर' का भेद नहीं रहता और वह एकात्म हो जाता है। स्मरण के लिए उसके पास बचता ही क्या है, सिर्फ सर्वेश के। ऐसी मीरां के जीवन परिचय को डॉ. महेन्द्र जनजीवन में व्याप्त लोकाधार के माध्यम से सामने लाये हैं। यह आधार चित्तौड़, वृंदावन, द्वारिका आदि तक फैला हुआ है और इसमें पहली बार मीरां विषयक अनेक चमत्कारयुक्त घटनाएं प्रकाश में आई हैं।

'निर्भय मीरां' तिथियों का संकलन नहीं है। वह तो आज तक जनमानस के हृदय पटल पर उकेरी गई अन्यतम अल्पना है। उसका आधार इतिहास नहीं, साहित्य है। इतिहास में आधा असत्य होता है और साहित्य में अपने समय का संपूर्ण सत्य। डॉ. महेन्द्र ने इतिहास के ऊहापोह की अपेक्षा लोकचित्त की प्रभावान्विति को उभारने का सफल प्रयास किया है। नानाविध चित्र और प्रसंगों की उद्भावना को जिस खूबी से डॉ. महेन्द्र ने प्रस्तुत किया है, वह मन को बांध लेता है, झकझोर देता है और पुन: सोचने पर मजबूर करता है।

यहां यह प्रश्न नहीं है कि हम डॉ. भानावत की स्थापना से सहमत हैं अथवा नहीं। यहां मुख्य मुद्दा यह है कि उन्होंने जो स्थापनाएं जन से लेकर हमें सौंपी हैं, उनके बारे में गंभीरता से सोच विचार करें। जांच-पड़ताल करें और मंथन करें। उन्होंने जो तथ्य दिये हैं वे उनके मनगढ़ंत नहीं हैं। वे तथ्य उन्होंने लंबी साधना के बाद प्राप्त किये हैं। उनकी प्राप्ति का आधार जन-मन के अध्येता वे संत-पुरुष हैं जिनसे वे मिले हैं और जिनकी धारणाओं को अविकल उन्होंने हमें सौंपा है।

जनचेतना का प्रतीक ही मीरां रही है। मीरां पर इतने शोध हो जाने पर भी जो सामने आया है, वह कम विवादास्पद नहीं है और उसके साक्ष्य भी खरे नहीं हैं परन्तु मीरां हमारी आस्था का विषय है, अनास्था का नहीं। वह श्रद्धा का विषय है, अश्रद्धा का नहीं। वह हमारी मन-आत्मा का निर्झर संवाद है, तर्क-कुतर्क का मत-अभिमत नहीं।

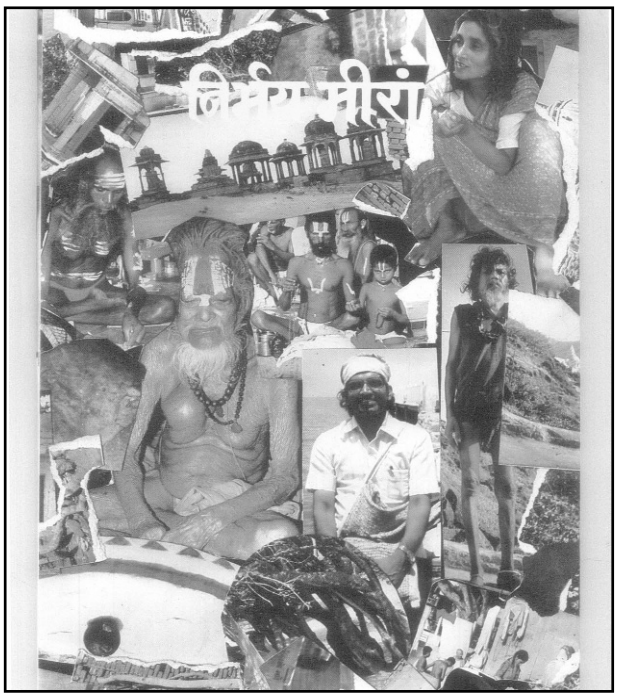


फलत: हमें उसके बारे में जिज्ञासु बना रहना है एक भक्त की तरह और तद्विषयक जानकारी से अपने को समृद्ध करते जाना है।

डॉ. महेन्द्र ने 'निर्भय मीरां' में हमारी आस्था को चोट नहीं पहुंचाई है बलिक उसे और पुष्ट किया है। कहीं कुछ छूटता नजर आता है तो वह है हमारा तत्कालीन इतिहास। वह इतिहास जो मीरां के बारे में प्रचलित अटकलों की पुष्टि करता है या उस पर असहमति जाहिर करता है, लेकिन मीरां को संपूर्ण नहीं बनाता है। मीरां ही क्यों, हमारे संपूर्ण भक्तयुगीन साहित्य के प्रणेता इतिहास से अधिक जन विश्वास की संपत्ति रहे हैं। उसी जनाधार को डॉ. महेन्द्र ने प्रस्तुत कर मीरां के अध्येताओं को पुन: सोचने-समझने का अवसर प्रदान किया है, यही इसी कृति की जीवंत उपलब्धि है।

## घटना बहुल आकुलता व सदिच्छा का भाव

**-डॉ. जीवनसिंह-**

मीरां के बारे में आज तक हम जो कुछ जानते-समझते आ रहे हैं, डॉ. भानावत की खोजपूर्ण दृष्टि ने उसके सामने प्रश्नवाचक चिन्ह लगा दिया है। उन्होंने मीरां को एक नई पहचान देने का प्रयास किया है। उसके पीछे घटना बहुल आकुलता, सक्रियता व सदिच्छा का भाव छुपा हुआ है।

ऐसा लगता है कि लेखक ने जो कुछ अपनी यात्राओं के क्रम में किंवदंतियों-जनश्रुतियों या मिथकथाओं के रूप में सुना है, उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया है। मेरी राय में किंवदंतियां एवं लोकमिथक इतिहास-क्रम बनाने में सहायक होते हैं, उनके भीतर बहुत बड़ा सच भी छिपा रहता है लेकिन वे पूरी तरह इतिहास नहीं होते। उनके भीतर समाज की आकांक्षाएं और उसकी सामूहिक मनोदशा का 'आत्मगर्वित' रूप अवश्य रहता है जो कभी-कभी वास्तविकता को तोड़ता-मरोड़ता हुआ अपने पक्ष में प्रस्तुत करने का दुराग्रहपूर्ण प्रयास भी करता है।

डॉ. भानावत लोककलाविद् हैं इसलिए लोक स्वभाव व उसके भाषाई मुहावरे के ठाठ को उन्होंने एक कुशल नट की तरह साध लिया है।

## अनुभूतिपरक सृष्टि-कृति

**-डॉ. पूनम दईया-**

'निर्भय मीरां' मीरां से सम्बद्ध स्थानों की भ्रमण यात्रा पर आधारित है। कुछ वर्षों से उत्तर आधुनिकता की चर्चा बड़ी जोरों पर है। उत्तर आधुनिकता यह मानती है कि हर कृति अन्तत: एक स्वप्न ही है जो गल्प पर आग्रह करती है। क्या उत्तर आधुनिकता की जड़ें हमारे पुराणों में नहीं देखी जा सकती? 'निर्भय मीरां' पुस्तक एक अनुभूतिपरक सृष्टि है, कृति है।

इस पुस्तक को पढ़ने से हमारे आलोचनात्मक ज्ञान की ऐतिहासिक प्रामाणिकता खंडित होती है अतएव सबकुछ अनोखा लगने लगता है क्योंकि इतिहास दृष्टि, मीरां संबंधी शोध-खोज से, आलोचनाओं से, पाठों से, 'निर्भय मीरां' मुठभेड़ करवाती है।

डॉ. भानावत इस पुस्तक को एक शोध मानते हैं पर यह शोध न होकर एक अलग तरह की सर्जनात्मक यात्रा है जो अतीन्द्रिय बोध पर आधारित है। डॉ. भानावत ने अपने अन्तर्ज्ञान के द्वारा पूरी एक लीला की सृष्टि की है। हमारे समय को लीला की तरफ ले जाने का यह उपक्रम बड़ा ही जोखिमभरा है जिसे मनुष्य सर्जनात्मकता की संभावनाओं में तो आत्मसात कर सकता है पर इससे बाहर उसे स्वीकार बड़ा जटिल हो जाता है। 'निर्भय मीरां' पुस्तक शोध नहीं है क्योंकि शोध करने पर तर्क शुरू हो जाता है।

प्रमाण देने की बात आ जाती है। यहां एक ही बात है जो स्वत:सिद्ध है जिसे प्रमाण की, पुष्टि की आवश्यकता ही नहीं है। लोकदेवता कल्लाजी के वरिष्ठ सेवक सरजुदासजी के माध्यम से लेखक ने जिस इतिहास की रचना की है वह इतिहास किसी काल-अकाल का हनन नहीं होता। उसकी लिखावट किन्हीं पट्टों-परवानों पर नहीं होकर हृदय पर होती है। वह मात्र पढ़ने या देखने की वस्तु नहीं होता। वह सर्वकालिक होता है।

भानावतजी ने मीरां संबंधी सारे ऐतिहासिक प्रमाणों को ठुकराकर अपने अनुभव के आधार पर इस पुस्तक की रचना की है। उन्होंने अपने अनुभवों से हम सभी को लाभान्वित किया। मैं उनके इस साहसिक कदम के लिए बधाई देता हूं क्योंकि ऐसा कार्य बड़ा जोखिमभरा होता है और यह जोखिम भानावतजी ने उठाई है।

# याद वीर की सालती ज्यों कुहनी की चोट

**-विद्याविन्दुसिंह-**

राखी का संबंध मात्र सगे भाई-बहिनों से ही नहीं जुड़ा रहा। संकट और विपदा के समय बहिनों ने दुश्मनों से रक्षा करने के लिए रक्षा-सूत्र भेजकर सहायता करने का आमंत्रण दिया तो तत्काल भाई के रूप में अपनी वीरता तथा रण कौशल से सर्व प्रकारेण सहयोग किया। इतिहास में युग-युगों तक उनके आदर्श उल्लेख अमिट रहेंगे।

ऐसे अनेक संस्थान पीठ हैं जहां की छात्राएं-बहिनें प्रतिवर्ष ही अनेक बंधु-बांधवों को रखा-सूत्र भेज उनके शुभमंगल की चाह रखती हैं। साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में भी कुछ लेखिकाएं हैं जो वर्षों से अपने परिचित सहधर्मी बंधुओं को राखी पर काव्यमय मंगल संदेश भेजती रही हैं। लखनऊ से ख्यात लेखिका विद्याविन्दुसिंह द्वारा प्रेषित कविता-सूत्र डॉ. महेन्द्र भानावत के संग्रह की शोभा बने हुए हैं। उनमें से चार यहां प्रस्तुत हैं-

**( 1 )**

जगदम्बा मंगल करे, पूरन हो हर काज।
राखी नेहाशीष की, बहन भेजती आज।।
रक्षा बंधन आ गया, बहन जौहती वाट।
संस्कृति की रोली रचे, उन्नत रहे ललाट।।
याद वीर की सालती, ज्यों कुहनी की चोट।
नेह मास दिन सब रहे, भले आंख की ओट।।

**( 2 )**

द्रोपदी की पुकार पर
आने वाले बंधु कृष्ण
हर युग में हों।
आस्था के गजेन्द्र को
जब ग्रसने लगे अनास्था की ग्राह
चक्र सुदर्शन ले नंगे पांव
दौड़कर आने वाले हरि
हर युग में हों।
और वही हरि भाई-बहन के
हर संकट में रक्षा कवच दे।

**( 3 )**

सब सम्बन्ध भले हों झूठे।
बहन-बन्धु का स्नेह न छूटे।।
राखी कहती यह संदेश।
कहीं रहें जी देश-विदेश।।
सुख में दुख में साथ निभायें।
सबका दुख बांटें, सुख पायें।।

**( 4 )**

सम्बन्धों के उथले जग में
चाहूं स्नेहभरी गहराई।
बन्धु ! आज जब मन भर आया
राखी जब तेरी सुध लाई।।
कहां गये थे नेह के नाते
कुशलक्षेम की सारी बातें।
फिर-फिर सावन सी भादो सी
साथियों की सुंदर बरसातें।।
गुड़िया छितराकर पिटवाना।
फिर गीली घूघरी बंटवाना।।
झूले पर बैठी भौजाई।
पेंग मारते नटखट भाई।।
देवर की वह प्यारी चुटकी।
चुनरी मांगे ननदी छुटकी।।
वह सावन कजली, मल्हार।
नभ छूते झूले बौछार।।

*कान्यो मान्यो*

# महिलाओं में आशिष कथन

कान्यो बोला- हमारे यहां धर्म, अध्यात्म, संस्कृति और जीवन-चेतना के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रसंग तो महिलाओं से ही जुड़े हुए हैं। वर्ष भर के व्रतानुष्ठान ही इतने हैं कि उनके नाम थकान देने वाले हैं। इसीलिए कहा जाता है कि सूप में राई के जितने दाने समा जायें उतने व्रतानुष्ठान हैं। इन सबके पीछे जो धारणा है वह महिला का सुहागपन बना रहने का है। वह आजीवन सौभाग्यवती बनी रहे इसलिए गणगौर पूजती है। काति नहाती है। दशा लेती है। दीपक-अगरबत्ती करती है। व्रत करती है। पूजा करती है। मनौती लेती है।

मान्यो ने बात बढ़ाई- इसके लिए नारी जीवन में आशिष का बड़ा माहात्म्य बताया गया है। एक महिला अपने से बड़ी के पांव छूती है। धोक लगती है और बदले में सुहाग का आशीर्वाद पाती है। होली, दीवाली, दशामाता जैसे त्यौहार पर तो पूजनोपरांत हर महिला घर की बड़ेरी, सास आदि तथा पास-पड़ौस की महिला के पगे लगने जाती है।

कान्यो ने इस बात को छल्ला दिया-इस क्रिया में बहू-बेटी थोड़ी नीचे झुककर अपने दोनों हाथों से बड़ी-बूढ़ियों के पांव दबाती हैं और बदले में सुहागिन रहने का आशिष पाती है। यह आशिष उनके लिए वरदान होता है। मान्यो ने पुछल्ला ठोका- बड़ी-बूढ़ी बतौर आशीर्वाद बहू को ऊंचा वो (उत्कर्ष हो)। जीवता रो (दीर्घायु हो)। दूधां फलो (वंश वृद्धि करो)। सवागी रो (सुहागिन बनी रहो) जैसे कथन कह उल्लास व्यक्त करती हैं।

कान्यो ने कान के पास कहा- दीवाली पर तो नख-शिख तक सजी-धजी बहू घर-परिसर, मुंडेर, तुलसी, क्यारा, देवाले, पथवारी तथा देवी-देवता के नाम दीपक रखकर पगे लागणा करती है। इन दीप स्थानकों से भी आशिष मांगती है। सास के पांव दबाने की रस्म मेवाड़ में कई जातियों में प्रचलित है। अपने हाथों से नकदी तथा कपड़ा लेकर घुटनों से पिंडली तक पांव मसाजती हैं तथा भेंट रखती हैं। इस अवसर पर आशीर्वाद स्वरूप एवात अमर रीजो (सुहाग अमर रहे)। लछमी रा भंडार भर्या रीजो (लक्ष्मी से भंडार भरपूर रहे) जैसे कथन मन को उल्लसित किये रहते हैं।

मान्यो बोला- गांवों में यह आशीर्वाद गायकी के रूप में यूं चलता-फलता है-

खेती खात रै, एवात साथ रै / दुख जातो रै, सुख आतो रै / ढांडा वधै, टांडा वधै / बळदां री जोड़ी रे वै / अम्मर सुहाग देवै।

अर्थात् खेतों में खाद बना रहे। सर्वदा सुहाग रहे। दुख जाता रहे। सुख आता रहे। पशु धन की वृद्धि हो। बैलों की जोड़ी बनी रहे। सुहाग अमर हो।

कार्तिक मास के पूरे माह भौर में उठकर महिलाएं सरोवर नहाने जाती हैं और कार्तिक-कथा कहती-सुनती हैं। कथा के बाद हरिभणो गीत में आशीर्वचन के बोल इस प्रकार सुनने को मिलते हैं-

थें न्हाया सो उली तीर / पाप गया सो पैली तीर / म्हैं न्हाया सो जल में बैठ पाप गया सै पींदे ठेठ।

अर्थात् इस किनारे नहाये, पाप उस किनारे चला गया। जल में बैठ नहाये तो पाप ठेठ जमीं के तल में बैठ गया। यानी सर्वप्रकारेण पवित्र हो गये। पुण्य फल की प्राप्ति हो गई। पगे लागणो का यह दस्तूर विभिन्न जातियों में जुदा-जुदा भी है पर मूलभाव एकसा है- परिवार में सुख, शांति और समृद्धि बनी रहे और पति-पत्नी का जोड़ा अखंड अमर रहे। कान्यो-मान्यो गले मिले। धन्य है हमारा देश और यहां के वासीन्दे।

# हिन्दुस्तान जिंक़ की प्रथम सस्टेनेब्लिटी रिपोर्ट 2015-16 का विमोचन

**उदयपुर।** हिन्दुस्तान जिंक की प्रथम सस्टेनेब्लिटी रिपोर्ट 2015-16 का विमोचन हिन्दुस्तान जिंक के प्रधान कार्यालय में किया गया। सस्टेनेब्लिटी रिपोर्ट का विमोचन जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल, मुख्य वित्तीय अधिकारी अमिताभ गुप्ता, निदेशक परियोजना नवीन सिंघल तथा मुख्य प्रचालन अधिकारी विकास शर्मा ने किया।

इस अवसर पर सुनील दुग्गल ने कहा कि हिन्दुस्तान ज़िंक ने 50 वर्षो के दौरान औद्योगिक विकास किया है तथा कंपनी अपनी ईकाइयों के आस-पास रहने वाले लोगों के आजीवन में सुधार के लिए उल्लेखनीय कदम उठाएं है जिससे उनके जीवन में महत्तवपूर्ण बदलाव आया है।

हिन्दुस्तान जिंक़ सदैव पर्यावरण, सुरक्षा, सामाजिक विकास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में तथा सामुदायिक विकास के प्रति सदैव कटिबद्ध रहा है।

हिन्दुस्तान जिंक़ के हेड-कार्पोरेट काम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि सस्टेनेब्लिटी रिपोर्ट हिन्दुस्तान जिंक़ के पर्यावरण, सुरक्षा, सामाजिक विकास एवं निगमित के क्षेत्र में निरन्तर प्रयासों को प्रमाणित करती है।




स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।